International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 157-160
Received: 20-01-2023
Accepted: 23-02-2023

हरि प्रसाद
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
हरि प्रसाद
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

हरि प्रसाद एवं डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी

सारांश
यह शोध पत्र ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस शोध कार्य को शहडोल जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी – 2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 20 विद्यालयों से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 800 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु किया गया है। स्कूली उपलब्धि के कारक संभवतः उन पहलुओं की उपेक्षा करते हैं जिनमें व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। प्रारंभिक बिंदु में ही अकादमिक उपलब्धि हो सकती है, जहां व्यापक भिन्नता होती है, गैर–निष्पादन का बिंदु उत्कृष्ट उपलब्धि के बिंदु तक होता है। यदि हम छात्रों के एक समूह पर विचार करते हैं, तो एक तरफ कुछ छात्र उच्च उपलब्धि वाले पाए जाते हैं और कुछ एक तरफ कम उपलब्धि वाले होते हैं, जबकि छात्रों की एक बड़ी संख्या हमेशा मध्यम उपलब्धि के रूप में दिखाई देती है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है, लेकिन छात्र और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूट शब्दः शहडोल जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, ग्रामीण, शहरी, छात्र–छात्राएँ, शैक्षिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।
छात्र उपलब्धि एक निश्चित समय सीमा में एक छात्र द्वारा सीखी गई शैक्षणिक सामग्री की मात्रा का माप है। प्रत्येक निर्देश स्तर के विशिष्ट मानक या लक्ष्य होते हैं जो शिक्षकों को अपने छात्रों को सिखाना चाहिए। उपलब्धि का आकलन आमतौर पर लगातार प्रगति और समझ की जांच और परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता है, हालांकि, इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि इसका सबसे अच्छा मूल्यांकन कैसे किया जाता है या इसके कौन से तत्व सबसे महत्वपूर्ण हैं।
विद्यार्थी की उपलब्धि उस सीमा को संदर्भित करती है जिस सीमा तक एक शिक्षार्थी ने अपने लघु या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है। अकादमिक प्रदर्शन में व्यक्तिगत अंतर व्यक्तित्व और बुद्धि में अंतर के साथ दृढ़ता से सहसंबद्ध होते हैं। साथ ही, छात्रों के आत्म–प्रभावकारिता, आत्म–नियंत्रण और प्रेरणा के स्तर भी उपलब्धि के स्तर को प्रभावित करते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल शहडोल जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। आधुनिक समय में शिक्षा की एक प्रणाली के शिक्षण अधिगम परिणाम की प्रभावशीलता और दक्षता के बारे में चिंता बढ़ रही है, जिसका मूल्यांकन छात्रों की उपलब्धि के संदर्भ में किया जा सकता है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक विकास की व्यापक अवधि का एक हिस्सा है। यह संदर्भित करता है कि एक छात्र ने शैक्षिक वर्ष के दौरान अध्ययन के विभिन्न विषयों में क्या हासिल किया है। अकादमिक उपलब्धि काफी हद तक अंतर–व्यक्तिगत अंतरों (समय–समय पर व्यक्ति के भीतर अंतर) या व्यक्तिगत मतभेदों के कारण यानी एक व्यक्ति और दूसरे के बीच के अंतर के कारण प्रभावित होती है।

3. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

5. शोध समस्या का सीमांकन :
शोध कार्य का क्षेत्र जिला शहडोल है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सोहागपुर, गोहपारू, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन तक परिसीमन किया गया है।

6. शोध विधियाँ
शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण
प्रस्तुत शोध हेतु अद्धवार्षिक परीक्षा के परिणाम से माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से ग्रामीण व शहरी क्षेत्र और छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात किया गया है।

7. न्यादर्श चयन :
अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित शहडोल जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी –2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 20 विद्यालयों से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 800 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण :
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – खुल्लर, के.के. (1988)[1], अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017)[4], सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017)[5], तिवारी, श्वेता (2020)[6], झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2020)[7] और सिंह, पूजा एवं जोसेफ, बेला मैरी (2022)[8]।

9. शोध क्षेत्र का परिचयः
शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0$38′ उत्तरी अक्षांश से $24^0$20′ उत्तरी अक्षांश एवं $30^0$28′ पूर्वी देशांतर से $82^0$12′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंह नगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंह नगर हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या
शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (छ)		400	400
मध्यमान (ड)		58.85	62.70
मानक विचलन (क)		16.30	16.87
क्रान्तिक निष्पत्ति (ष्जष्द्ध		3.28	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (400-1) + (400-1) = 399 + 399 = 798$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों

के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.85 है तथा मानक विचलन 16.30 है और शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 62.70 है तथा मानक विचलन 16.87 है।

798 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 3.28 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

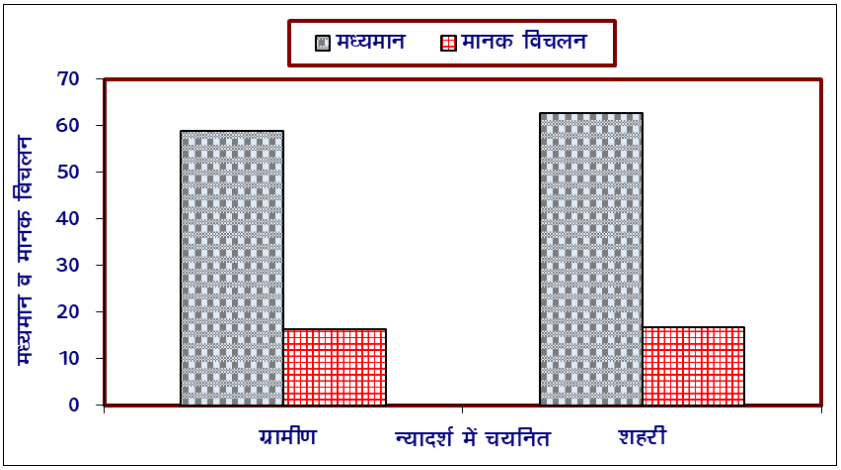

आरेख क्र. 1: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना क्र. 2: "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।"

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		58.75	59.23
मानक विचलन (SD)		16.35	16.29
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.41	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (400-1) + (400-1) = 399 + 399 = 798$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.75 है तथा मानक विचलन 16.35 है और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59. 23 है तथा मानक विचलन 16.29 है।

798 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.41 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः परिकल्पना क्र. 2 निरसित होती है।

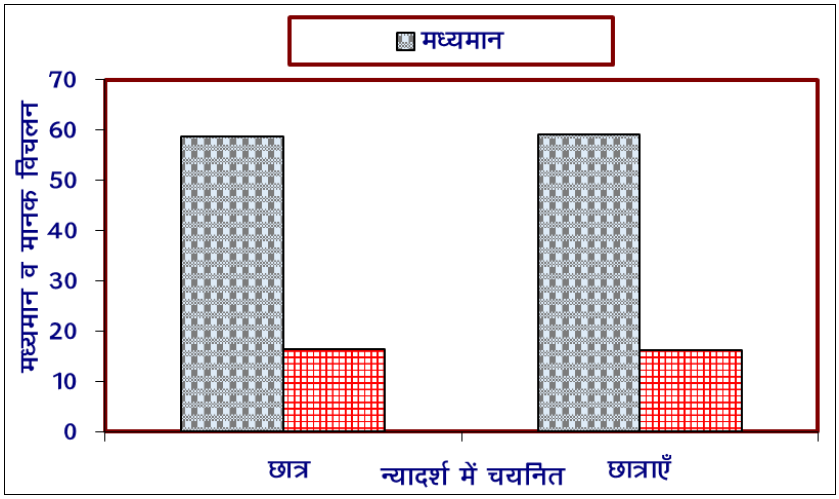

आरेख क्र. 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष :

शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.85 है तथा मानक विचलन 16.30 है और शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 62.70 है तथा मानक विचलन 16. 87 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.75 है तथा मानक विचलन 16.35 है और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.23 है तथा मानक विचलन 16. 29 है।

शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है, लेकिन छात्र और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ

1. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
2. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017): "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017;2(5);79-83.
5. तिवारी, श्वेता (2020): माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Scientific Research in Science and Technology. 2020;7(6):366-371.
6. झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमारः सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):369-372.
7. सिंह, पूजा एवं जोसेफ, बेला मैरी : स्रजनामकता और शैक्षणिक उपलब्धि का छात्रों पर प्रभाव, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education; Multidisciplinary Academic Research, 2022;19(4):356-361.